प्रगति प्रतिवेदन

वर्ष 2017–18

मानव जीवन विकास समिति
ग्राम बिजौरी पोस्ट मझगवॉ जिला – कटनी (म.प्र.) 483501
फोन नं. – 07626–275223, 275232, 9425157561
ईमेल – mjvskatni@gmail.com
वेबसाइट– www.mjvs.org

संदेश

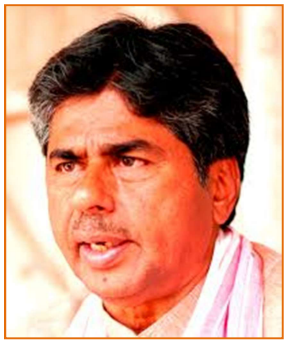

प्रत्येक परेशान, गरीब व वंचित समुदाय के व्यक्तियों की मदद व सहायता करें ताकि एक बराबरी के माहौल में लोग स्वच्छ वातावरण के अनुसार निवास कर सके । बुद्धिजीवियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, शुभचिंतकों ऐसे रूचि रखने वाले उस अंतिम व्यक्ति की मदद करे, जिसे उनकी आवश्यकता है ।

स्नेहयुक्त व्यवहार सबका सहयोग दिलाता है । और सबके सहयोग से हर मंजिल आसान हो जाती है।

डॉ.राजगोपाल पी. व्ही.

आभार

मानव जीवन विकास समिति की 18 वीं वार्षिक रिपोर्ट आपके हाथ में है, जिसे आप पढ रहे हैं । मैं जानता हूँ कि रिपोर्ट को पढते–पढते आप मुस्कुराते हुए टीम को धन्यवाद भी दे रहे हें और सोच रहे हैं कि ये सब कैसे खडा किया होगा । हम आपको धन्यवाद देते हुए साधुवाद दे रहे हैं जो आपने हमें इन पिछले 18 वर्षों में कई उतार चढाव में आपने हमें साथ दिया, आपको भले न स्मरण हो पर मुझे और मेरी टीम को आपकी एक एक बात हमें सीखने के लिये प्रेरणादायी रही है।

इस सेन्टर में आने के बाद मैंने अपने आपको इसी का बना के रखा शहर की बडी–बडी बिल्डिंग से अच्छा खेत की मिटटी, हरे भरे पेड, शाम सुबह चिडियों का चहकना, रात में कुत्तों का भोकना और रात में जंगली जानवरों का खेत में उत्पाद मचाना और उसे ठीक करना ही मेरी दिनचर्या बन गई । यहॉ आने के बाद मैंने तीन साल इसी सेन्टर को देखता व समझता रहा परन्तु मन नहीं माना और मैंने नवम्बर 2000 में अपने साथियों के साथ श्री राजा जी के मार्गदर्शन में मानव जीवन विकास समिति का गठन कर दिया और जबलपुर पंजीयक कार्यालय से रजिस्ट्रेशन करा ही लिया, लगन और आप सबकी दुआ सहयोग से समिति को यहॉ तक लाकर खडा किया।

आज इस सेन्टर में रहने के लिये आवास 100–150 तक के लोगों को बैठने के लिये हाल, साफ–सुथरी कीचिन, शेड, लायब्रेरी, आफिस को चलाने के लिये एक सक्षम टीम व साजो सामान के साथ परिपूर्ण है । भले ही कटनी से 13 किमी. की दूरी पर लाल मिटटी, मुरूम जंगल के बीच बिजौरी गॉव में सेन्टर अपने 27 एकड जमीन में स्थापित है लेकिन बिजौरी मझगवॉ का नाम दुनिया के कई देशों में लोगों के मुह की जवान पर आता है, जो भी जितने लोग भी इस सेन्टर को व समिति को जानते हैं उन सबको मैं पुनः आभार व्यक्त करते हुए पूरी रिपोर्ट पढने के बाद आपके सुझाव आमंत्रित हैं।

निर्भय सिंह

सचिव

मानव जीवन विकास समिति

1. मानव जीवन विकास समिति–एक परिचय

मानव जीवन विकास समिति एक सामाजिक गैर–सरकारी संगठन है, जिसका गठन वर्ष 2000 में किया गया था । विगत 18 वर्षों में संस्था ने अपने उद्धेश्यों के प्रति सजग रहते हुए सराहनीय कार्य किया है और आगे निरन्तर ग्रामीण क्षेत्रों में काम कर रही है । समिति के ऑफिस स्टॉफ से लेकर फील्ड के कार्यकर्ताओं की क्षमतावृद्धि के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में वंचित समुदाय के साथ उनके क्षमता वर्धन हेतु प्रशिक्षणों का आयोजन करना व लोगों की स्थायी आजीविका की ओर अग्रसर बढ रही है, आम आदमी को हासिये से निकालकर मुख्यधारा में जोडने के लिये संस्था ने अनवरत् प्रयास किया है। मध्यप्रदेश के महाकौशल, बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड क्षेत्र के 262 गॉवों में सघन रूप से काम को बढा रही है, समिति के संस्थापक गॉधीवादी विचारक डॉ. राजगोपाल पी.व्ही. जी के निर्देशन में समिति के निम्न दस स्तम्भों पर विचार–विमर्श कर अपने काम को आगे बढाने में निरन्तर सक्रिय है जबकि समिति कटनी जिले के बडवारा तहसील के अन्तर्गत बिजौरी (मझगवॉ) में अपने 27 एकड के क्षेत्र में प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना, जडीबूटी संग्रह व संवर्धन, वृक्षारोपण व जैविक खेती को बढावा देते हुए किसानों को प्रशिक्षण देने का भी कार्य किया जा रहा है । इसी के तहत बडवारा ब्लाक में निर्वाचित पंचायत महिला जनप्रतिनिधियों के साथ उनके शिक्षण–प्रशिक्षण व ग्रामसभा सशक्तिकरण, घरेलू हिंसा, स्कूल चले अभियान जैसे कार्यक्रमों के आयोजन मे महिलाओं के साथ सामाजिक मुद्धों पर कार्य को किया जा रहा है। समिति का मानना है कि वंचितों और किसानों के जीवन को बेहतर बनाने में सशक्त भूमिका निभाएगी जिससे भूखमुक्त और भयमुक्त समाज की रचना का सपना साकार हो सके।

दृष्टि :–

गरीबी उन्मूलन की दिशा में प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन पर क्षमता वृद्धि कर जीविकोपार्जन के साधन खडे करना।

विजन / लक्ष्य :–

प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन को सुचारू रूप से संचालित कर गरीबी उन्मूलन की दिशा में आगे बढना, जिससे समाज में स्वच्छता, रचनात्मक कार्यों की क्षमता का विकास हो । स्वरोजगार की दिशा में प्रशिक्षित होकर स्वावलम्बी समाज का निर्माण करना ।

समिति के दस स्तम्भ :–

1. **हमारा आर्थिक**– परावलम्बी समाज से स्वावलम्बी समाज निर्माण के सिद्धान्त पर चलते हुए प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन पर आधारित अहिंसक समाज रचना में लगे समुदाय का निर्माण ताकि भूखमुक्त समाज की रचना हो सके।

2. **हमारी राजनीतिक** – लोक आधारित लोक उम्मीदवार के सिद्धान्त पर लोकनीति के अनुसार चलने के लिये लोगों को खडा करना ताकि सही अर्थों में लोकतंत्र की स्थापना की जा सके ।

3. **हमारी शिक्षा** :– समग्र विकास पर आधारित ज्ञान का प्रचार–प्रसार एवं स्कूली बच्चों का सर्वागीण विकास के साथ–साथ रोजगारोन्मुखी शिक्षा देना ताकि बेरोजगारी की समस्या का उन्हें सामना न करना पडे।

4. **हमारा समाज** :– अखण्डता, सम्प्रभुता, समभाव, परस्पर भाई–चारे के साथ एकता, समानता, सामूहिकता एवं न्याय पर आधारित समाज जिसमें ऊॅच–नीच अगडे–पिछडे जाति आधारित भेदभाव न हो ।

5. **हमारी संस्कृति** :– स्थानीय लोककला एवं संस्कृति के कलाकारों को संगठित कर पुनर्जीवित करना, उनका संवर्धन एवं संरक्षण कर वातावरण उपलब्ध कराना।

6. **हमारी कृषिः**– लम्बे समय तक भूमि की उत्पादन क्षमता बनाए रखने वाली खेती को प्रोत्साहन देकर पारम्परिक ढंग से खेती कर रहे किसानों का उत्साह बढाना ताकि वे कृषि की रीति–नीति का विकास कर सकें।

7. **हमारा सशक्तिकरण** :– गरीबी झेल रहे दीनदुखी, जो अपाहिजों जैसा जीवन जीने के लिये विवश हैं, समाज में विद्यमान ऐसे स्त्री–पुरूषों के प्रति असामनता और उपेक्षा को दूर कर समानता का दर्जा दिलवा कर शोषण, अत्याचार, एवं भ्रष्टाचार से मुक्त सशक्त सामाजिक ढॉचे का निर्माण करना।

8. **हमारा परिवेश** :– स्वच्छ व स्वस्थ वातावरण का निर्माण करना जहॉ हिंसा, लूटपाट, वैमनस्यता, दुराचार तथा तेरे मेरे के लिये कोई स्थान न हो ।

9. **हमारा सहयोग एवं मित्रता** :– परस्पर सहयोग की भावना को पुनर्जीवित कर एक दूसरे की सहायता व मित्रता को बढाना देना ताकि पूरा गॉव और समाज अपनी समस्याऍ आपसी सहयोग व मित्रता के आधार पर सुलझा सकें।

10. उपरोक्त विचारों के क्रियान्वयन के लिये तथा समाज कल्याण के काम का विकास करने में संस्था एक मजबूत आधार स्तम्भ है।

सारणी कमांक 1– कार्यक्षेत्र एक नजर में:–

क्रं.	जिला	ब्लॉक	गॉव
1	कटनी	बडवारा	121
2	डिण्डौरी	समनापुर	40
3	बालाघाट	बैहर	22
4	उमरिया	मानपुर	5
5	सिहोर	बुधनी	10
6	जोधपुर (राजस्थान)	जोधपुर	10
7	केरल	3 जिला, 3 ब्लॉक	15
8	दमोह	तेन्दूखेडा	60
9	दमोह और पन्ना पार्टनरशिप	'शाहनगर	20
		जबेरा	20
09		**12**	**341**

2. पंचायतीराज :–

भारत के संविधान के 73 वें संशोधन के अनुरूप प्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायतीराज व्यवस्था को सफल बनाने, विकास योजनाओं को मूर्तरूप दिया जाकर, लोकतंत्रिक ग्रामीण स्थानीय व्यवस्था और जनभागीदारी को सुदृढ करना, आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय के लिये संविधान की 11 वीं अनुसूची में वर्णित विषयों से संबंधित योजनाओं के क्रियान्वयन, अनुज्ञपण एवं प्रबंधन के बारे में पदाधिकारियों को समुचित मार्गदर्शन तथा प्रशिक्षण देना एवं पंचायतों को उनके अधिकार, कर्त्यव्य एवं दायित्वों को परिचित कराकर प्रदेश में ग्रामीण विकास त्वरित गति से हो ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित करना।

इन्हीं उपर्युक्त उद्धेश्यों के प्राप्ति के लिये शासन व सामाजिक संस्थाओं द्वारा अपने अपने तरीके पंचायतों और ग्रामसभाओं को मजबूत करने के लिये काम करने की रूपरेखा बनाकर प्रारम्भ किये । जैसा कि म.प्र. में 51 जिला पंचायत, 313 जनपद पंचायत एवं 23006 ग्राम पंचायतें हैं । इन्हीं सभी पदो पर एससी., एसटी, ओबीसी, एवं जनरल को मिलाकर 50 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित की गई तो कटनी जिले की कुल 408 ग्राम पंचायतों में से बडवारा की 66 ग्राम पंचायतों में वर्ष 2015 के चुनाव के समय **36** ग्राम पंचायतों में महिला सरपंच बनी जबकि 50 प्रतिशत आरक्षण के तहत 33 ही बनना चाहिये था। इन 66 पंचायतों में से मानव जीवन विकास समिति ने द हंगर प्रोजेक्ट के सहयोग से 40 ग्राम पंचायतों की उन 279 महिला सरपंचों और पंचों के साथ काम करना प्रारम्भ किया । कटनी जिले के 110 लिंगानुपात को देखते हुए और बढाना और 43.3 प्रतिशत साक्षरता के स्तर को ऊपर उठाने के भी प्रयास धीरे–धीरे चल ही रहे हैं । इसके उन समस्त महिला जनप्रतिनिधियों (EWR) के साथ उनकी क्षमता की वृद्धि के प्रशिक्षणों का आयोजन के साथ निम्न प्रकार के प्रशिक्षणों एवं कार्यक्रमों की व्यवस्था की गई है।

- आवश्यकता आधारित तकनीकी कार्यशाला का आयोजन ।
- आवश्यकता आधारित स्टैण्डिंग कमेटी ट्रेनिंग।
- फेडरेशन की बैठकों का आयोजन ।
- फेडरेशन कोर ग्रुप बैठकों का आयोजन।
- शासकीय अधिकारियों से संवाद स्थापित करना।
- कुपोषण के खिलाफ अभियान का संचालन ।
- सुरक्षित पंचायत अभियान का आयोजन।
- मीडिया संवाद स्थापित करना।
- ग्रामसभा सशक्तिकरण कार्यक्रम का आयोजन।

कटनीपत्रिका.09

patrika.com

पत्रिका . जबलपुर . गुरुवार, 01.06.2017

कार्यक्रम ...

पंचायत के स्थाई समितियों के सदस्यों ने जाने अपने अधिकार व कर्तव्य

बड़वारा में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

कटनी. मानव जीवन विकास समिति बिजौरी बड़वारा द्वारा ग्राम पंचायत की स्थाई समितियों के सदस्यों को उनके अधिकार व कर्तव्य बताने एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में सदस्यों को शिक्षा, स्वास्थ्य व समाज कल्याण समिति के काम, अधिकार, पंचायत विकास में भूमिका, वार्षिक कार्ययोजना के अनुसार काम करना और बजट के अनुसार खर्चे को समझकर बनाने की जानकारी दी गई। प्रोजेक्ट समन्वयक रामकिशोर ने महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की और बताया कि पंचायत स्थायी समिति सदस्यों ने 26 जनवरी की ग्रामसभा में शिक्षा में सुधार के लिए, स्वास्थ्य केन्द्रों में बिजली, पानी, डॉक्टर व नर्स की व्यवस्था, आंगनबाड़ी और आशा कार्यकर्ता को सक्रिय करना, समाज कल्याण की योजनाओं का लाभ पात्र हितग्राही को मिले, गांव को नशा मुक्त भी बनाने का प्रस्ताव रखा था। उन्होंने कहा कि प्रस्ताव सही क्रियान्वयन के लिए समितियों को आगे आना होगा, तभी ग्राम सभाएं सार्थक हो सकेंगी।

पंचायत स्थायी समिति सदस्य कला बाई, मंगी बाई, अंजना, ऊषा पटेल ने बताया कि पंचायत में समिति बनी है लेकिन ढाई साल हो गए और आज भी कई पंचायतों में समिति की बैठक नियमित नहीं हो रही है। उन्होंने कहा कि ऐसे में समिति को खुद सक्रिय होकर आगे आना होगा, जिससे पंचायत विकास की योजना बनाई जा सके। सदस्यों ने बताया कि स्कूलों में प्रवेश के समय आरटीई के तहत पात्र बच्चों का प्रवेश नहीं दिया जाता है। इस ओर भी समिति सदस्य ध्यान दें। कार्यशाला में कला बाई, जानकी केवट, मंगी बाई, संजो बाई, प्रेम बाई, बद्दा बाई, रामकली, सीमा, मुल्लाजन बी, ललती बाई, सरोज, सुहद्दी, फूलबाई, मीना, शिल्पा, काशी बाई सहित अन्य जन मौजूद थे।

ये बनाया गया एजेंडा

- वार्षिक कार्ययोजना के अनुसार क्या काम किया गया।
- बजट के अनुसार खर्चे की समझ बनाना।
- फंड की जानकारी व उपयोग कहां कैसे करना है समझ कर बनाना।
- कार्यक्षेत्र की आवश्यकताओं के आधार पर स्थाई समितियों को आगे लाना
- शिक्षा का अधिकार एवं कानून की जानकारी से अवगत कराना
- शिक्षा एवं मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता पर समिति की जवाबदेहिता सुनिश्चित करना
- शाला प्रबंधन समिति पदाधिकारी एवं सदस्यों के साथ बैठक करना
- स्कूल, आंगनबाड़ी में पानी, शौचालय की व्यवस्था कराना
- स्कूल चले अभियान में महिला जनप्रतिनिधियों व स्थाई समिति सदस्यों की भूमिका तय करना

उपर्युक्त विषयों के आधार पर बडवारा ब्लाक की 40 पंचायतों के 280 महिला जनप्रतिनिधियों के साथ उनके कार्य कौशल की क्षमता को बढाना व ग्रामसभाओं की सशक्तिकरण में अधिक से अधिक मतदाता शामिल

होकर अपने गॉव विकास की योजना बनवा सके और बनायी गई योजना को आगे बढाये, इसी परिपेक्ष्य में ब्लाक, जिले के शासकीय पदाधिकारियों और मिडिया के साथियों का भरपूर सहयोग मिल रहा है।

3. ग्रामीण पर्यटन (रूरल टूरिज्म) :–

मध्यप्रदेश में टूरिज्म को बढावा देने के लिये कई प्रकार के टूरिज्म चलाये जा रहे हैं, परन्तु **मानव जीवन विकास समिति** ने **फ्रान्स की संस्था तमादी** के साथ मिलकर रूरल टूरिज्म की अवधारणा के अनुसार सांस्कृतिक अदान–प्रदान की गतिविधियों का संचालन कर रही है। जिससे बाहर से आने वाले महिला पुरूष बच्चे गॉव में रूकना गॉव में खाना खाना और वही 4–5 दिन रूकना गॉव की संस्कृति से परिचित होना। गॉव में चल रही आर्थिक गतिविधियों को देखना समझना, खेती जैसे कार्यक्रमों में बढ चढकर हिस्सा लेना आदि गतिविधियॉ शामिल रहती है भारत में हमने तीन तरह के सर्किट बनाकर रखे हैं और तमादी के साथ मिलकर आगे बढाते हैं जिसमें 15 दिन, 15 दिन 25 दिन एवं 17 दिन सामिल है। 15 दिन में दिल्ली से जयपुर , अलवर, उदयपुर ,आगरा, से दिल्ली वापस तथा 15 दिन में दिल्ली से कटनी या भोपाल, उमरिया, सिहोर, बोरी, सॉची, आगरा से दिल्ली वापसी। 25 दिन वाले में कटनी, उमरिया, भोपाल, सिहोर जयपुर, उदयपुर, जोधपुर ओर्छा खजुराहो से वापसी दिल्ली । 17 दिन के लिये उत्तराखण्ड व केरला के सर्किट भी बनाये गये हैं।

वर्ष 2017–18 में गुप तो नही आये लेकिन वहां के समूहों की गतिविधियां सुचारू रूप से संचालित है।

जिन गॉवों में ये सब रूकते हैं तो कुल बजट का 10 प्रतिशत गॉव विकास के लिये पैसा सुरक्षित रखकर गॉवों के SHG समूहों को मदद स्वरूप दिया जाता है। जिसमें वह समूह आपस में बैठकर यह तय करता है कि सामूहिक रूप से गॉव में क्या काम करना चाहिये जैसे उमरिया जिले के एकता स्व सहायता समूह द्वारा इस वर्ष तय किया गया कि गॉव में हम सब लोग हल्दी लगाने, कम्पोस्ट खाद के पिट बनवाने, बाथरूम, टॉयलेट को ठीक से बनवाने और गॉव का सामूहिक टेन्ट खोलने के प्रस्ताव के साथ काम को किया गया तो उस इलाके में एक माहौल बना कि जैविक हल्दी लेना है तो मरईकला और गोवरातात से खरीदा जाये और लोग खरीद भी रहे हैं ।

इसी प्रकार सिहोर जिले के बोरी गॉव में मुस्लिम और आदिवासी महिलाओं ने सफलता स्वसहायता समूह का गठन कर काम को आगे बढा रही है, जिसमें भोपाल शहर नजदीक होने के कारण रेडीमेड कपडों की काफी मॉग को देखते हुए गॉव की महिलाओं को सिलाई मशीन खरीद कर कपडों की सिलाई व एक सिलाई सेन्टर ही खोल दिया है और आगे गॉव में एक सामूहिक आटा चक्की लगाने की चर्चा चल रही है। सिलाई सेन्टर खुलने से गॉव की महिलाऍ जो बाहर काम करने जाती थी तो वे सभी महिलाऍ सिलाई का काम सीखकर कपडा की सिलाई कर अपने परिवारों का भरण पोषण करने लगी है काफी हद तक गाव का पलायन रूका है।

इसी प्रकार से राजस्थान के जोधपुर जिले में प्रदीप चौधरी जी के मार्गदर्शन में 15 महिलाओं को मिलाकर हीरामल स्वसहायता समूह का गठन कर गॉव में एक गोशाला की स्थापना की और गॉव में दूध की मॉग की पूर्ति करने का काफी हद तक सफलता पाई हैं तथा राजस्थान के जोधपुर जैसे इलाके में वृक्षारोपण के लिये एक अभियान चलाया जितने पौधें लगाना तो ठीक परन्तु उन्हें बचाना इस समूह की पहली प्राथमिकता है, इसी उद्धेश्य से यह समूह काम कर रहा है, ऐसे ही उत्तराखण्ड में तो समूह नहीं बना परन्तु परिवार अपने अपने घरों में टायलेट बनाने का काम बडे ही सुन्दर तरीके से किया है।

4. जागरूकता कार्यक्रम :–

शासन की जनकल्याणकारी योजनाऍ गॉवों तक सुचारू रूप से पहुॅचे और पात्र हितग्राहियों को उनका उचित लाभ मिले इस दिशा में मानव जीवन विकास समिति अपने सिमित कार्यकर्ताओं के साथ फिल्ड में लगातार काम कर रही है, जिसमें गॉवों में समूह तैयार करना उनको शासन की योजनाओं की जानकारी देना और उचित सलाह देते हुए उस संबंधित विभाग तक पहुॅचाना व रास्ता बताना शामिल है इसी उद्धेश्य की प्राप्ति के लिये थ्त। से प्राप्त जमीन पर खेती संबंधी जानकारी देकर उनको वंचित समुदाय को रास्ता बताने का काम किया जा रहा है।

जागरूकता कार्यक्रम के तहत ही कुपोषण पर लोगों को जानकारी देना, शिक्षा के अधिकार, मनरेगा में काम की उपलब्धता व रोजगार दिलाना, लोकसेवा गारण्टी और छोटे किसानों को कृषि विभाग की योजनाओं की जानकारी के साथ गॉव–गॉव में चौपाल लगाना, मिटिंग करना, दिवाल लेखन करना व पम्पलेट पोस्टर के माध्यम से लोगों को जागृत करने की गतिविधियों में काम को संचालित किया जाता रहा है । तथा समाज परिवर्तन की दिशा में युवाओं को जोडने के लिये युवाओं की लिस्ट तैयार करना और युवा शिविरों का आयोजन करना । इस वर्ष अलग– अलग यूथ कैम्प के माध्यम से 250 युवाओं को जोडा गया है।

5.एडवोकेसीः–

समाज के अंतिम पायदान में खडे व्यक्ति को सहायता करना मदद करना उसके सुख–दुःख में साथ देने से वडी जनपैरवी का काम हो नहीं सकता, इसी सोच व विचार को लेकर श्री राजगोपाल पी.व्ही. द्वारा देश के उन तमाम वंचित समुदाय की मदद करने के साथ राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सरकारों के साथ, राजनैतिक दलों के साथ, प्रशासनिक अधिकारियों के साथ गॉधीवादी संस्थाओं व व्यक्तियों के साथ निरन्तर संवाद की प्रक्रिया को आगे बढाते हुए लोगों को अधिकार प्राप्ति के लिये खडा करने का काम निरन्तर चलता है ।

पूरे देश व दुनिया में अहिंसात्मक विचार को मनाने वाले नवजवान साथियों के साथ समय–समय पर युवा प्रशिक्षणों को आयोजन करना भी शामिल है। वर्ष 2016–17 के दौरान देश में ऐसे 12 युवा शिविरों का आयोजन कर 1650 युवा साथियों के साथ सीधा संवाद स्थाापित कर उनके गॉवों की समस्या के निदान के लिये किया गया प्रयास सराहनीय है। वंचित समुदाय के समस्या समाधान की अहिंसात्मक प्रयास को लगातार करते रहने और लोगों को खडा करना और संवाद के साथ समाधान की ओर बढना और इन तमाम कामों को करते करते रचना के काम को भली–भॉति करते रहना इसी के साथ शासन की योजनाओं के साथ उनको जोडने के प्रयास भी एडवोकसी के काम को भी मजबूती से करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

इसी का नतीजा है कि मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, झारखण्ड, बिहार, उडीसा, उत्तरप्रदेश व राजस्थान जैसे प्रदेशों में FRA के तहत लोगों को लाखों एकड जमीन प्राप्त हुई और आदिवासी परिवार उन जमीनों से खेती करके अपनी अजीविका चला रहे हैं।

6. स्कालरशिपः–

एजुकेशन सपोर्ट –

काफी लम्बे समय से सामाजिक क्षेत्र में उन तमाम सामाजिक कार्यकर्ताओं को उनके बच्चों की पढाई हेतु उनके सुचारू रूप से आवेदन देने पर समिति निर्णय लेती है। मानव जीवन विकास समिति द्वारा दो सदस्यी कमेटी का गठन किया गया है, जिनके पास आवेदन विचार हेतु भेजा जाता है और यह कमेटी निर्णय लेती है । यह पहले से तय है कि यह सपोर्ट उन साथियों को दिया जायेगा जो लम्बे समय से सामाजिक क्षेत्र के काम में लगे हैं और अपने बच्चों की पढाई व स्वास्थ्य खराब होने दवाई भी नहीं करवा पा रहे हैं, ऐसे साथियों का आवेदन आने पर कमेटी द्वारा विचार किया जाता है ।

उच्च शिक्षा की पढ़ाई करने के लिए संस्था ने तय किया की ऐसे छात्र जिनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है उसे शिक्षा प्राप्त करने हेतु आर्थिक मदद व सपोर्ट किया जाये जिससे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सके।

रिस्क (स्वास्थ्य) सपोर्ट –

सामाजिक क्षेत्र मे कार्य कर रहे सामाजिक कार्यकर्ताओं के बच्चों को आर्थिक सपोर्ट करने समिति का निर्णय है जिससे स्वास्थ्य सुविधा मिल सके।

7. रूरल इकोनामी (ग्रामीण अर्थव्यवस्था) –

प्रदेश व प्रदेश के बाहर जहॉ भी लोग अपने गॉव की अर्थव्यवस्था को ठीक करना चाहते हैं या आगे बढाना चाहते हैं उस गॉव में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन पानी जमीन पर आधारित वनोपज का संकलन जैसे कार्यों को प्राथमिकता के साथ करना चाहते हैं उन गॉवों के साथ सामूहिक रूप से बैठकर संगठन के माध्यम से ऐसे कार्यक्रमों को आगे बढाने के लिये कार्यक्रम तय किये जाते हैं जैसे सिहोर जिले की भीमकोठी, उमरिया जिले का मरई कला, कटनी जिले का कछारी एवं जूजावल डिण्डौरी जिले का रंजरा बालाघाट जिले का रतनपुर एवं झारखण्ड के हजारीबाग जिले **का चलकारी ,चतरा जिले का सेवई गांव** कई प्रकार के ग्रामीाण अर्थव्यवस्था के तहत काम किये जा रहे हैं, जिसमें बकरी पालन, सिंचाई की सुविधा से खेती को बढाना, महिलाओं के द्वारा सब्जी उत्पादन को बढाना वनोपज का संकलन एवं मार्केटिंग, सिंचाई सुविधा के साथ खेती में उत्पादन बढाकर अपने भरण पोषण के लिये अनाज उत्पादन करना।

कछारी गॉव कटनी जिला मुख्यालय से 45 किमी. पर बडवारा ब्लॉक के अंतर्गत एक ग्राम पंचायत है । जिसके आश्रित गॉव लमकना व झापी है । कछारी पंचायत की कुल जनसंख्या 2555 है, जिसमें 1213 महिला एवं 1342 पुरूष है । यदि वर्ग के अनुसार देखते है, तो एस.सी महिला 61 पुरूष 67, एस.टी. महिला 546 व पुरूष 563, जनरल महिला 427 व पुरूष 502, एवं ओ.बी.सी. महिला 179 व पुरूष 210 लोग निवास करते है । उपर्युक्त आकडे के आधार पर यह पंचायत आदिवासी बाहूल्य पंचायत है । जिसमें गोंड आदिवासी बहुतायद में रहते है, सभी वर्गों को यदि मिलाकर या अलग से देखते हैं, तो महिलाओं का प्रतिशत काफी कम है । जबकि अब सरकारी कार्यक्रम के तहत बढोत्तरी के संकेत मिल रहे है, जिसमें यहॉ पर शासकीय योजनाओं की सुविधा में प्राथमिक स्कूल 3 माध्यमिक स्कूल 2 है । इन स्कूलों में दर्ज बच्चों की संख्या लडकों की 182 व लडकियों की 157 है । जबकि ऑगनवाडी में लडकों की संख्या 145 व लडकियों की 134 है । गॉव में कोई स्वास्थ्य की सुविधा नही है, वहॉ 2 किमी. की दूरी पर भुडसा गॉव में उपस्वास्थ्य केन्द्र है । पानी के स्त्रोत के लिए देखा जाये तो कुल मिलाकर 12 हैण्डपम्प व कुल शौचालयों की संख्या 211 है । पूरे गॉव को मिलाकर देखा जाये तो 80 प्रतिशत घरों में बिजली के घरेलू कनेक्शन दिखाई दे रहे है । आप के साधन के रूप में गॉव में कृषि एवं कृषि मजदूरी है, परन्तु इसके अलावा में सिजनल के रूप में कई प्रकार की मजदूरी व छोटे–छोटे धन्धे किये जा रहे है । जिसमें तेंदुपत्ता संग्रह, सब्जी उत्पादन, मिट्टी के बर्तन बनाना व छोटी–छोटी दुकानें खोलकर अपने स्तर से आमदनी को बढाने के काम को किये जा रहे हैं । इसके बावजूद गॉव में कुल मिलाकर मतदाता 1423 जिसमें महिला 609 व पुरूष 814 है, कुल परिवार संख्या 554 में से एपी.एल. 634 व बीपी.एल. 187 और ए.ए.वाय 03 है ।

कछारी पंचायत में सामाजिक कार्य का काम मानव जीवन विकास समिति की ओर से 2005 से प्रारंभ किया गया था । जिसमें गॉव के 20–25 लोंगों को FRA के तहत 95 एकड की जमीन प्राप्त हुई है, जो अलग–अलग हिस्सें में है । इसके अलावा आवासीय भूमि आवास बनाने हेतु दिलाई जा रही है ।

कछारी गॉव में महिलाओं का समूह है, जो महिलाएॅ अपने स्तर से कई सामाजिक कार्य किये जा रहे हैं, इसी के साथ कछारी गॉव का एक बगीचा मोहल्ला में भी महिलाओं का समूह है । जहॉ पर कुम्हार समाज के लोग मिट्टी के बर्तन बनाने का काम करते है ।

आगे की रणनीतिः–

कछारी गॉव की आदिवासी महिलाअसें के साथ जो उनके खेत हैं, उन खेतों में खेती करने की सहायता की जा सकती है, जबकि ये सब 15 महिलायें अभी भी खेती का काम करती है, परन्तु सीजनल खेती जैसे राहर, सेम, धान आदि, यदि इनके साथ और 12 माहों में सब्जी उत्पादन के काम में लगाया

जायेगा तो अच्छी प्रकार से काम को कर सकती है । और सब्जी बेचने के लिए बाजार की भी कोई दिक्कत नही है । आसपास के गाूवों व 15 किमी. पर बडवारा ब्लॉक है, जहॉ बाजार लगता है, और सब्जी की काफी खपत भी है, और इसके आलावा साप्ताहिक बाजार भी है, जहॉ पर सब्जी व अन्य प्रकार के अनाज की काफी खपत रहती है, खासकर दलहन व चावल के लिए इसी के साथ सब्जी की खपत शमिल है । कछारी गॉव में माया बाई आदिवासी के मार्गदर्शन में 15 महिलाओं के साथ खेती एवं सब्जी का कार्य करना प्रस्तावित किया गया, जिसमें 15000/– रू प्रति परिवार लागत आयेगी ।

इसी के साथ बगीचा मोहल्ले के कुम्हार जाति के लोग अपने परम्परा के अनुसार मिट्टी के बर्तन बनाने का काम बडी ही कुशलता से कर रहे है । यदि इनके साथ और थोडा मदद की जाये तो ये सभी लोग मिट्टी के कई प्रकार के बर्तन बनाने का काम कर सकते हैं, अभी दिवाली के सीजन के समय में दिये बनाने का काम करते हैं, उसमें भी कई प्रकार की समस्या है, जैसे गोबर बीनने दूसरे के खेत में जाते है, तो वे गॉव के बडे किसान यह कहकर मना कर देते है, कि हमारे खेत से लकडी व गोबर मत उठाओ तो उन कुम्हारों का धन्धा कम हो जाता है । तो इन कुम्हारों के साथ लकडी व कोयला खरीदने की मदद यदि की जाती है, तो वे सब कुम्हार परिवार अपने रोजी रोटी से अपने पैरों में खडे हो सकते हैं, और इनका जीवन यापन सुधार की ओर जायेगा ।

इसके अलावा कछारी गॉव के ही बगीचा मोहल्ला में कुम्हार परिवार के साथ मिट्टी के बर्तन बनाने वाले परिवारें के साथ में 20 परिवार है, जिनके 250 मटकों पर 5000 रू की लागत आयेगी, लकडी व गोबर के लिए जो 15 दिन में एक चक्के से 250 मटके बनाते है, तो एक माह में 500 मटके तैयार होते है । जो एक भट्टा के लिए ईधन की जरूरत पडती है, लकडी व गोबर खरीदना पडता परन्तु मिट्टी सरकारी तालाब से निकालकर लाते हैं । इस कारण से मिट्टी में कांई लागत नही है । कुल 20 परिवारों के साथ काम को आगे बढाया जा सकता है ।

स्वंय सहायता समूह बनाकर महिलाओ ने दी गरीबी को चुनौती

(ग्राम रूनीपुर एवं भांकरा में संचालित स्वंय सहायता समूह की रिपोर्ट)

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता खुद होता है अगर वह कुछ करने की ठान ले तो वह अपने जीवन को बदल सकता है। जौरा जिला मुरैना म.प्र. की दलित बाहुल्य बस्ती रूनीपुर एवं भांकरा की महिलाओ ने यह कर दिखाया है आर्थिक रूप से पिछडें इन दोनो गॉव में अधिकांश लोग गरीब एवं भूमिहीन है। ग्रामीणो के पास अपने परिवार के गुजारे के लिए एक मात्र उम्मीद मजदूरी है। गरीबी और अभावो के बीच जीवन जीने के अभ्यस्त इन परिवारो की महिलाओ को महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सहयोग से स्वंय सहायता समूह गठन कर गरीबी से लडने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है आज इन महिलाओ द्वारा गठित किये गये समूह के प्रयासो से गॉव में आर्थिक और सामाजिक हालतो में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है।

महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सहयोग से दोनो गांव की महिलाओ ने अपने–अपने गांव में स्वंय सहायता समूह का गठन कर अपना काम कर रही पूरी लगन एवं मेहनत सुरू कर दिया है। बस 2015 के अंत में महात्मा गांधी सेवा आश्रम द्वारा महिलाओ को सुनिश्चित अजीविका उपलब्ध कराने के मुद्दे मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया परिवार के लोगो की पहल पर गांव की लगभग 100 से अधिक महिलाओ ने मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण प्राप्त किया प्रशिक्षण के उपरान्त संस्था द्वारा उन्हें मधुमक्खी

पालन के लिए संसाधन उपलब्ध कराऐ गये धीरे–धीरे मधुमक्खी पालन की छोटे स्तर पर की गई शुरूआत उनके परिवारो में आज बडा बदलाव लेकर आई है।

सर्वप्रथम रूनीपुर गांव में महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सहयोग से 17 महिलाओ ने मिलकर जय बजरंग वली साख समूह का गठन किया गया उसके बाद समूह की बैठक आयोजित कर समूह संचालन के लिए

सर्वसम्मती से कमेटी का गठन किया जिसमें अध्यक्ष व सचिव नियुक्त किया गया। समूह में सभी महिलाओ ने सर्वसम्मती से बीस–बीस रूपया प्रत्येक महिला प्रति महीने बचत समूह में जमा करने का निर्णय लिया गया समूह की प्रत्येक महीने बैठक की जाती है जिसमें आपसी सहमती से समूह को और अधिक महबूत बनाने के बारे में चर्चा की जाती है आपसी बचत के अलावा भी इन महिलाओ को मधुमक्खी पालन से जो आय होती है उसे भी समूह के खाते में जमा किया जाता है उसके उपरान्त समूह के सभी सदस्य आपस में निर्णय लेकर जरूरतमन्द महिलाओ को रोजगार हेतु समूह से लॉन उपलब्ध कराया जाता है।

ग्राम रूनीपुर में 7 महिलाओं क्रमशः गीता , कृष्णी , राजकुमारी , मिथलेश , नीता , सरोज को दस–दस हजार रूपये भैंस पालन हेतु उपलब्ध कराये गये है इसी प्रकार गुडिया , एवं कमला को 5 एवं 10 हजार रूपये सिलाई मशीन एवं किराना स्टोर हेतु उपलब्ध कराये गये है।

इसी प्रकार ग्राम भाांकरा में भी कस्तूरबा गांधी साख समूह का गठन महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सहयोग द्वारा किया गया है जिसमें 15 महिलाऐं सदस्य है।

वर्तमान में दोनो समूह को और अधिक आर्थिक रूप से मजबूत करने हेतु मानव जीवन विकास समिति के माध्यम से 75–75 हजार रूपयें उपलब्ध कराऐ गये है। जिनको समूह में बैठक कर सभी सदस्यो की आपसी सहमती से 16 महिलाओ को लोन दिया गया है। सभी महिला सदस्यो ने मिलकर तय किया है कि लोन द्वारा शुरू किये गये रोजगार से प्राप्त होने वाली आय मे से प्रति महिने एक–एक हजार रूपया समूह को वापिस किया जाऐगा।

इसी प्रकार यही प्रकिया ग्राम भांकरा के कस्तूरबा गांधी साख समूह में भी अपनाई गई हे इस समूह में महिलाओ को रोजगार हेतु लोन उपलब्ध कराया गया है ।

समूह द्वारा प्राप्त किये गये रोजगार में अब इन महिलाओ के पुरूश एवं बच्चे भी सहयोग कर रहे है। स्वंय सहायता समूह द्वारा दिये गये रोजगार से इन परिवारो को आर्थिक मजबूती प्रधान की जा सकेगी साथ ही महिलाओ को मेहनत एवं आत्मनिर्भरता की सीख प्राप्त होगी।

मानव जीवन विकास समिति के सहयोग से महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा द्वारा संचालित यह योजना महिलाओ के जन–जीवन में गुणात्मक परिवर्तन के लिए प्रत्यन्नशील है जिसका परिणाम आंगे आने वाले समय में और अधिक प्रभावी रूप से दिखने लगेगा।

वृक्षारोपणः— समिति के सेन्टर में 300 पौधे विभिन्न प्रजाति के लगाये गये जिसमें फलदार, इमारती लकडी, जडी बूटी के काम आने वाले पौधे रोपे गये पौधों को लगाकर उनको जीवित रखना अपने आप में भारी चुनौती रही है । परन्तु 300 पौधें में से 175 जीवित बचा पाने में सफल रहे ।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी बिजौरी गॉव के हाई स्कूल में समिति की तरफ से 20 पौधों का स्कूल के बच्चों व शिक्षकों के साथ रोपण किये गये। जिसमें 20 के 20 पौधे जीवित हैं, स्कूल के बच्चों पर पर्यावरण के नाम से जागृति लाना आवश्यक है । हमारा मानना है । प्रत्येक तीज त्यौहार जन्मदिन के समय एक पौधा जरूर लगायें।

४. जडी बूटि संग्रह व संर्वधनः—

प्रायः विलुप्त होती प्रजातियों में से उनको संरक्षित करना और उनके द्वारा बनाई जाने वाली दवाईयों का प्रचार प्रसार करना वैसे भी यह सब जंगलों में पाई जाने वाली जडीबूटियॉ हैं, फिर में समिति से अपने सेन्टर में 110 प्रकार की जडीबूटियों का संग्रह किया हुआ जिनको नमूने के तौर पर हम कुछ प्रदर्शित कर रहे हैं।

अडूसा —सर्दी जुकाम,श्वास खॉसी

- इसके दो पत्तियों को एक कप चाय मे डालकर 5 मिनिट तक पकायें, पकने के बाद उसे छानकर चाय की तरह पीने मे सर्दी, जुकाम, खांसी, बुखार आदि रोगों से तुरन्त राहत मिलती है।
- इसके दो पत्तों के रस को सुखाकर चूर्ण बनाकर शहद के साथ चाटने से श्वास, खांसी ठीक हो जाता है।
- जिन व्यक्तियों को डबल निमोनिया की शिकायत है अडूसा के पत्ते का चूर्ण को बच्चों को डेढ़ चुटकी और बड़ों को तीन चुटकी देने से उनको भी इसमे लाभ मिलता है।
- टानसिल गले के अंदर श्वास, शीत से होने वाले दर्द मे भी इसके पत्तियों का काढ़ा पीने या पिलाने मे शीघ्र लाभ मिलता है।

गिलोय :— उपयोग विधि — बुखार

इसका सत्व शहद के साथ मिलाकर बच्चों को डेढ़ चुटकी खिलायें ।

हडजोड :— उपयोग विधि —''हड्डी जोड़ने में''

शरीर के किसी भी अंग की हड्डी टूटने पर या फेक्चर होने पर हड़जोड़ को पिलाकर या बांधकर उपयोग किया जा सकता है। हड़जोड़ मे गाठें होती है जोकि गांठ के बीच का हिस्सा पिलाने के लिए फाक का हिस्सा बांधने मे उपयोग होता है।

सर्पगन्धा :— उपयोग विधि :— ''हाई ब्लड प्रेसर कन्ट्रोल''

इसकी पत्तियों का चूर्ण बनाकर शुद्धिकरण किया जाता है। जिसके हाथ पैर बैठने मे, सोने मे झुनझुनी होती है उसको शक्तिवर्द्धक पाउडर बनाकर देने मे खून की चाल सही हो जाती है। उसको शक्तिवर्द्धक एवं बाजीकरण पाउडर देने से सात दिन मे आराम मिलने लगता है और एक माह पीने से ब्लडप्रेशर कन्ट्रोल हो जाता है।

अपराजिता , उपयोग — पीलिया, पेट साफ, अंग — फल, पत्ती।

मिनी आंवला , उपयोग — पेट साफ, अंग — फल चूर्ण।

रामतुलसी , उपयोग — सिर दर्द, पेट साफ एवं मच्छर भगाने पर अंग — पंचाग।

महावला , उपयोग — शक्तिवर्धक , अंग — बीज।

मुलहैटी , उपयोग — दांतदर्द , अंग — फल।

जटामासी , उपयोग — चर्मरोग , अंग — फल।

लेमनघास , उपयोग – वातनाशक , अंग – पत्ती।

सदाबहार , उपयोग – डायबिटीज , अंग – पत्ती ।

अर्जुन , उपयोग – ब्लडप्रेशर , अंग – छाल ।

सुदर्शन , उपयोग – कान की दवा , अंग – फूल।

गोगुल , उपयोग – हवन सामग्री , अंग – छाल।

रीठा , उपयोग – बाल धोने , अंग – फल ।

शीकाकाई , उपयोग – बाल धोने , अंग – फल।

नाम – कलिहारी , उपयोग – गर्भपात , अंग – कंद ।

बैचांदी , उपयोग – शक्तिवर्धक , अंग – कंद।

गुडमार , उपयोग – डायबिटीज, शुगर , अंग – पत्ती।

भृंगराज पीला , उपयोग – बाल काले , अंग – पत्ती।

सतावर , उपयोग – दूधवर्धक, शक्विर्धक , अंग – कंद ।

9. लाईब्रेरी की स्थापनाः–

समाज सेवा के क्षेत्र में लगे सामाजिक कार्यकर्ताओं को उनके काम के लायक पुस्तकें बहुत ही कम पढने को मिलती है यदि थोडा बहुत मिली भी तो गॉधी जी , बिनोबा जी के विचार ज्यादा हुआ तो उपन्यास वह भी हिन्दी भाषी प्रदेश में काम करने वाले साथियों को तो और बहुत कम ही मिलती है। समिति के सेन्टर में काफी पुराने समय से ही ज्ञान मन्दिर के नाम से एक 15 गुणित 20 का टीन छप्पर वाला बडी कुऑ के पास उचाई पर बना था, बस एक दिन बैठे–बैठे विचार आया कि क्यों न इस ज्ञान मन्दिर को असली ज्ञान मन्दिर में परिवर्तित किया जाये। फोन उठाया अनीष भाई को लगाया घन्टी बजी जबाव आया मैने अपनी फरियाद सुनाया एवं बुलावा भेजा और टिकट बनी अनीष भाई रेवान्चल पकडकर कटनी आये। एक दूसरे के विचारों से अवगत हुये काफी चर्चा के बाद यह तय किया कि हॉ सही है, इस ज्ञान मन्दिर को असली ज्ञान मन्दिर में परिवर्तित किया जाये । फीता लाये रस्सी पकडी उस ज्ञान मन्दिर के चारों तरफ गोलाई में एक 15 फिट की दूरी पर चबूतरा बनाने की सहमति बनी चिन्ह

लगाये और काम की रूपरेखा तय हो गई। यह तय किया कि सबसे पहले चबूतरा फिर उस मकान के अन्दर का काम फिर अलमारी और फिर अपने पास उपलब्ध 126 प्रकार की 4335 किताबों को व्यवस्थित सहेजा जाये। यह सही है कि ये किताबे 80 प्रतिशत हिन्दी में है और वह भी अपने संगठनात्मक कार्य की खैर वह भी एक इतिहास है, नए आने वाले कार्यकर्ताओं का उत्साह बढाने में काम आयेगी बस इसी तरह से उस मकान को लाईब्रेरी में परिवर्तित कर दिया और लाईब्रेरी का स्वरूप लेकर उसका हिसाब किताब रखने लगे।

10. अहिंसा प्रोत्साहन व शिक्षा केन्द्र

मानव जीवन विकास समिति अपने उद्देश्यों के अनुरूप समाज व देश में अहिंसा को बढावा देने के लिए कई प्रकार की गतिविधियां संचालित करती हैं, जिसके अंतर्गत युवाओं में अहिंसा की शिक्षा के सैद्वांतिक और व्यावहारिक समझ विकसित किया जाता है।

- **तिलक राष्ट्रीय महाविद्यालय बडवारा की तरफः–** छात्र–छात्रओं के सेमेस्टर के तहत अलग–अलग विषयों पर प्रोजेक्ट बनाने की पढाई एवं उस विषय में प्रोजेक्ट बनाकर कॉलेज में सम्मीट करना ताकि बच्चे भविष्य में इस तरह के प्रोजेक्टों पर काम कर सके । यहॉ आने वाले छात्राओं में जडीबूटि संग्रह एवं संवर्धन, वर्मी कम्पोस्ट एवं नर्सरी का रखरखाव एवं निर्माण विषय पर लगातार 25 दिन आकर अध्ययन किए एवं अपना–अपना प्रोजेक्ट बनाकर सम्मीट किए और समिति के तरफ से प्रत्येक बच्चे की उनके फार्मेट के अनुसार बच्चों को नम्बर देकर कॉलेज में जमा करने की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है।

धन्यवाद!